पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.09.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

JOIN
KAYP
FOR
STRONG
ARYA SAMAJ
STRONG
NATION
STRONG
YOUTH
Contact: 9013137070

वर्ष-31 अंक-8 आश्विन-2071 दयानन्दाब्द 190 16 सितम्बर से 30 सितम्बर 2014 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.09.2014, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का 36 वां वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन सोल्लास सम्पन्न

लवजिहाद व धर्मान्तरण से बड़े ही दूरगामी गम्भीर परिणाम होंगे- -डा. अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, श्री भारतभूषण धूपड़,श्री रवि चड्डा,श्री वेदप्रकाश व श्री रामकुमार सिंह। द्वितीय चित्र में श्री सुभाष आर्य (नेता सदन, दक्षिण दिल्ली नगर निगम) का स्वागत करते स्वामी आर्यवेश, प्रो.सारस्वतमोहन मनीषी, डा.अनिल आर्य व श्री प्रकाशवीर शास्त्री।

नई दिल्ली। रविवार, 7 सितम्बर 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्,नई दिल्ली के 36 वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में ''राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन'' का भव्य आयोजन योग निकेतन,पंजाबी बाग,दिल्ली में किया गया। सम्मेलन में देश के लगभग 14 प्रान्तों से 1500 से अधिक आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि आज लवजिहाद के रूप में जो छदम युद्धचल रहा है,वह राष्ट्र के अस्तित्व के लिये घातक है,इसके बड़े ही दूरगामी गम्भीर परिणामों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। डा.आर्य ने कहा कि धर्मान्तरण होने से विचार,सोच व राष्ट्रीयता ही बदल जाती है अतः केन्द्र सरकार को धर्म परिवर्तन पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये अन्यथा कश्मीर की तरह हिन्दु यहां भी अल्पसंख्यक हो जायेगा। जिससे अलगाववाद व आंतकवाद को बढ़ावा मिलेगा तथा इनका मुकाबला करना ओर अधिक कठिन हो जायेगा। सरकार को देश हित में इस पर अविलम्ब कार्यवाही करनी चाहिये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्य वेश ने कहा कि चरित्रवान युवा राष्ट्र की अमूल्य सम्पति है और राष्ट्र का भविष्य ऐसे ही नौजवानों पर निर्भर है। आर्य समाज दिग्भ्रमित युवकों को सही दिशा देकर देश की दशा व दिशा को बदलने का कार्य करेगा। आज भ्रष्टाचार, आंतकवाद,पाखण्ड–अन्धविश्वास समाज की जड़ों को खोखला कर रहे हैं, इनका मुकाबला वैचारिक क्रान्ति से ही किया जा सकता है,

श्री सुभाष आर्य (नेता सदन,दक्षिण दिल्ली नगर निगम) ने कहा कि स्वामी दयानन्द के आदर्शों पर चलकर ही भारतीय संस्कृति व सभ्यता की रक्षा हो सकती है, देश की वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने की अत्यन्त आवश्यकता है तभी हम हिन्दू समाज पर हो रहे चौतरफा आक्रमण का मुकाबला कर सकते हैं।

श्री ओमप्रकाश सिंहल (केन्द्रीय उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दु परिषद्) ने कहा कि समय की मांग है कि पूरा हिन्दु समाज एक जुट हो कर आने वाली समस्याओं का मुकाबला स्वयं करे। आर्य समाज हिन्दु समाज का प्रहरी है उसकी जिम्मेदारी ओर अधिक बढ़ जाती है।

श्री मांगेराम गर्ग(राष्ट्रीय अध्यक्ष,धर्म यात्रा महासंघ) ने कहा कि विचारों की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति होती है, देश में विघटनकारी ताकतें सर उठा रही हैं सरकार को चाहिये कि देश की एकता अखण्डता से खिलवाड़ करने वालो के साथ सख्ती के साथ पेश आये।

पार्षद श्री यशपाल आर्य ने कहा कि आर्य समाज के सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक है,आर्य समाज की आज पहले से भी अधिक आवश्यकता है,राष्ट्र के समाने आने वाली चुनौतियों का मुकाबला आर्य युवकों को ही करना है।

सम्मेलन में आर्य समाज के प्रचार प्रसार को गति देने, चरित्रवान युवा पीढ़ी तैयार करने, वेदों का प्रचार प्रसार करने, आरक्षण जाति आधारित न होकर आर्थिक आधार पर हो, आंतकवाद–लवजिहाद, नशाखोरी, बढ़ती अश्लीलता पर विचार किया गया। समारोह का उद्घाटन 'ओ३म्' ध्वज फहरा कर समाजसेवी श्री धर्मदेव खुराना ने किया।

वैदिक विद्वान स्वामी श्रद्वानन्द सरस्वती (पलवल), राष्ट्रीय महामन्त्री आचार्य महेन्द्र भाई, आचार्य सुखदेव तपस्वी (दिल्ली), स्वामी धर्ममुनि जी (बहादुरगढ़), प्रो. सारस्वतमोहन मनीषी (राष्ट्रीयकवि), आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, डा.वीरपाल विद्यालंकार, यशोवीर आर्य, प्रवीन आर्य (गाजियाबाद), अरविन्द संगल (चेयरमैन, नगर पालिका शामली) स्वामी सच्चिदानन्द जी (यमुना नगर), आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर), रवि चडडा, धर्मपाल आर्य, मित्रमहेश आर्य (अहमदाबाद), रामकृष्ण शास्त्री (राजस्थान), स्वामी नुकुल देव (उड़ीसा), योग निकेतन के मन्त्री श्री रामेश्वर गोयल, राजेश्वरमुनि (कैथल), स्वतन्त्र कुकरेजा (करनाल), मनोहरलाल चावला (सोनीपत), आनन्दप्रकाश आर्य (हापुड़), वीरेन्द्र योगाचार्य, रमेश चन्द स्नेही (हरिद्वार), योगेन्द्र शास्त्री, संतोष शास्त्री, ब्र.दीक्षेन्द्र, नरेन्द्र आर्य सुमन, ओम सपरा, रविन्द्र मेहता, चतरसिंह नागर, सुरेन्द्र मानकटाला, देवेन्द्र भगत, सुरेश आर्य आदि ने अपने विचार रखे।

फरीदाबाद से विद्याभूषणआर्य, करनाल से शान्तिप्रकाश आर्य, दिल्ली से जवाहर भाटिया व प्रवीन तायल, यमुना नगर से आनन्दप्रकाश वधावन, गाजियाबाद से सुनील गर्ग को ''आर्य युवा रत्न अवार्ड'' से सम्मानित किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार ने यज्ञ करवाया। श्री सौरभ गुप्ता, प्रणवीर आर्य, मनोज आर्य,अरूण आर्य, विमल आर्य, आशीष आर्य, प्रदीप आर्य, रामकुमार सिंह, राकेश भटनागर, विश्वनाथ आर्य, ओमवीर सिंह, रामचन्द्र सिंह, सुदेश भगत आदि के पुरूषार्थ से सम्मेलन शानदार सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। ऐमिटी शिक्षण संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष डा. अशोक कुमार चौहान व निदेशक श्री आनन्द चौहान ने अपनी शुभकामनाये प्रदान की। श्री वी.डी.शर्मा स्मृति छात्रवृति से सौरभ गुप्ता व शिवम मिश्रा को सम्मानित किया गया। ऋषि लंगर का आनन्द लेकर सभी आर्य युवक व आर्य जन पूरे उत्साह के साथ विदा हुए।

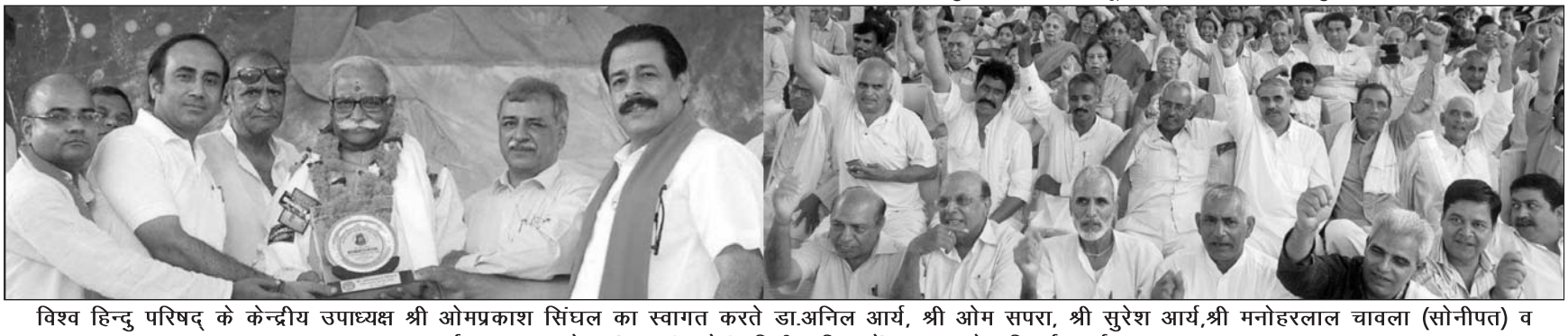

विश्व हिन्दु परिषद् के केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश सिंघल का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, श्री ओम सपरा, श्री सुरेश आर्य,श्री मनोहरलाल चावला (सोनीपत) व आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर), द्वितीय चित्र में उत्साह से परिपूर्ण आर्य बन्धु।

स्वामी दयानंद और आर्यसमाज की हिंदी भाषा को देन

– डॉ विवेक आर्य

स्वामी दयानंद ने 1857 के स्वाधीनता संग्राम को असफल होते देखा था और उसके असफल होने का मुख्य कारण भारतीय समाज में एकता की कमी होना था। स्वामी दयानंद ने इस कमी को समाप्त करना आवश्यक समझा। उन्होंने चिन्तन–मंथन किया कि अगर भारत देश को एक सूत्र में जोडना है तो उसकी एक भाषा होना अत्यंत आवश्यक है। यह रिक्त स्थान अगर कोई भर सकता था तो वह हिंदी भाषा थी।

स्वामी दयानंद द्वारा सर्वप्रथम 19 वीं सदी के चौथे चरण में एक राष्ट्र भाषा का प्रश्न उठाया गया और स्वयं गुजराती भाषी होते हुए भी उन्होंने इस हेतु आर्यभाषा (हिंदी) को ही इस पद के योग्य बताया। अपने जीवन काल में स्वामीजी ने भाषण, लेखन, शास्त्रार्थ एवं उपदेश आदि हिंदी में देने आरंभ किये जिससे हिंदी भाषा का प्रचार आरंभ हुआ और सबसे बढ़कर जनसाधारण के समझने के लिए हिंदी भाषा में वेदों का भाष्य किया।

इससे हिन्दू साहित्य और भाषा को नये उपादान प्रदान किये और प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए हिंदी भाषा को जानना प्रायरू अनिवार्य कर दिया गया। स्वामीजी इससे पहले संस्कृत में भाषण करते थे इसलिए केवल पठित पंडित वर्ग ही उनके विचारों को समझ पाता था। कालांतर में जब उन्होंने हिंदी भाषा में व्याख्यान प्रारंभ किये तो उससे जन साधारण की उपस्थिति न केवल अधिक हो गई अपितु जनता के लिए उनके प्रवचनों को ग्रहण करना आसान हो गया। स्वामीजी ने अपने संपर्क में आने वाले सभी देशी राजाओं को अपने राजकुमारों को हिंदी के माध्यम से धार्मिक शिक्षा दिलवाने की सलाह दी थी जिससे उनमें देश–भक्ति का सूत्रपात हो सके।स्वामीजी द्वारा अपने सभी ग्रन्थ हिंदी भाषा में रचे गये जैसे सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेद–भाष्य आदि। इनके सैकड़ों संस्करण छपे और देश में उनके प्रचार से हिंदी भाषा के प्रचार को जो गति मिली उसका पाठक सहजता से अनुमान लगा सकते हैं।

1882 में भारतीय शिक्षण संस्थाओं में भाषा के निर्धारण को लेकर श्हन्टर कमीशन्य के नाम से कोलकता में आयोग का गठन सर विलियम हंटर की अध्यक्षता में किया गया था। स्वामी दयानंद ने इस कमीशन के समक्ष हिंदी को शिक्षा की भाषा निर्धारित करने के लिए आर्यसमाजों को निर्देश दिया कि वे हिन्दी भाषा के समर्थन में हंटर आयोग में अपनी सम्मति भेजें। फर्रुखाबाद, देहरादून, मेरठ, कानपुर, लखनऊ आदि आर्यसमाजों को भी इस विषय पर कोलकता पत्र भेजने को कहा था।

हिंदी भाषा भारतीय जनमानस की मानसिक भाषा है इसलिए उसे ही पाठ्यक्रम की भाषा के रूप में स्वीकृत किया जाये ऐसा समस्त आर्यसमाज द्वारा हिंदी भाषा के प्रचार के लिए प्रयत्न किया गया था। निश्चित रूप से हिंदी भाषा के प्रचार के लिए यह कार्य ऐतिहासिक महनव का था। स्वामी जी के देहांत के पश्चात् आर्यसमाज के सदस्यों ने हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में दिन रात एक कर दिया। आर्यसमाज के सदस्यों द्वारा लाखों पुस्तकें हिंदी भाषा में अलग अलग विषयों पर लिखी गई। गद्य, पद्य, काव्य, निबन्ध आदि सभी प्रकार के साहित्य की रचना हिंदी भाषा में हुई। हजारों पत्र–पत्रिकाओं का हिंदी भाषा में प्रकाशन हुआ। सैंकड़ों पाठशालाओं, विद्यालयों, गुरुकुलों के माध्यम से हिंदी भाषा का सम्पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में जैसे मारीशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भी हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार हुआ। आर्य दर्पण (आर्य समाज का सर्वप्रथम हिंदी पत्र) , आर्य भूषण, आर्य समाचार, भारतसुदशा प्रवर्तक, वेद प्रकाश, आर्य पत्र, आर्य समाचार, आर्य विनय, आर्य सिद्धांत, आर्य भगिनी आदि अनेक पत्र तो विभिन्न आर्य संस्थाओं द्वारा 20 वीं शताब्दी आरम्भ होने से पहले ही निकलने आरम्भ कर दिए थे। 20 वीं शताब्दी में इनकी संख्या इतनी थी कि इस लेख में उन्हें समाहित करना संभव नहीं हैं। पाठक इस उल्लेख से समझ सकते हैं कि आर्यसमाज के प्रचार का माध्यम हिन्दी होने के कारण हिंदी भाषा के उत्थान में आर्यसमाज का क्या योगदान था।

स्वामी जी के प्रशंसक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की हिंदी भाषा को देन से साहित्य जगत भली प्रकार से परिचित है। कालांतर में मुंशी प्रेमचंद, कहानीकार सुदर्शन, आचार्य रामदेव, बनारसी दास चतुर्वेदी, इंद्र विद्यावाचस्पति, सुमित्रानंदन पन्त, मैथिलिशरण गुप्त, पदम् सिंह शर्मा आदि से आरंभ होकर हरिवंश राय बच्चन, विष्णु प्रभाकर, क्षितीश वेदालंकार आदि तक हजारों की संख्या में आर्यसमाज से दीक्षित और अनुप्राणित साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य की रचना की जिससे हिंदी समस्त भारत की साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित हो गई।

स्वामी श्रद्धानंद ने अपने पत्र सद्धर्म प्रचारक को एक रात में उर्दू से हिंदी में परिवर्तित कर दिया, उन्हें आर्थिक हानि अवश्य उठानी पड़ी पर उनके पत्र की प्रसिद्धि को देखते हुए उसे पढ़ पाने की इच्छा ने अनेकों पाठकों को देवनागरी लिपि सीखने के लिए प्रेरित किया। पत्रकारिता में नये आयाम आर्यसमाज के सदस्यों के स्थापित किये। पंजाब के सभी प्रसिद्ध अखबार जैसे प्रताप, केसरी, अर्जुन, युगांतर आदि अनेक पत्र हिंदी में ही निकलते थे, जो आर्यसमाजियों ने ही चलाए थे। पंजाब के जन आंचल में उस काल में उर्दू मिश्रित फारसी भाषा बोली जाती थी जिसके प्रचार में उर्दू पत्र जमींदार आदि का पूरा सहयोग था।

सैकड़ों गुरुकुलों, डीएवी स्कूल और कॉलेजों में हिंदी भाषा को प्राथमिकता दी गई और इस कार्य के लिए नवीन पाठ्य क्रम की पुस्तकों की रचना हिंदी भाषा के माध्यम से गुरुकुल कांगड़ी एवं लाहौर आदि स्थानों पर हुई जिनके विषय विज्ञान, गणित, समाज शास्त्र, इतिहास आदि थे। यह एक अलग ही किस्म का हिंदी भाषा में परीक्षण था जिसके वांछनीय परिणाम निकले। विदेशों में भवानी दयाल सन्यासी, भाई परमानन्द, गंगा प्रसाद उपाध्याय, डॉ0 चिरंजीव भारद्वाज, मेहता जैमिनी, आचार्य रामदेव, पंडित चमूपति आदि ने हिंदी भाषा का प्रवासी भारतीयों में प्रचार किया जिससे वे मातृभूमि से दूर होते हुए भी उसकी संस्कृति, उसकी विचारधारा से न केवल जुड़े रहे अपितु अपनी विदेश में जन्मी सन्तति को भी उससे अवगत करवाते रहे।आर्यसमाज द्वारा न केवल पंजाब में हिंदी भाषा का प्रचार किया गया अपितु सुदूर दक्षिण भारत में, आसाम, बर्मा आदि तक हिंदी को पहुँचाया गया। न्यायालय में दुष्कर भाषा के स्थान पर सरल हिंदी भाषा के प्रयोग के लिए भी स्वामी श्रद्धानंद द्वारा प्रयास किये गये थे।

वीर सावरकर हिंदी भाषा को स्वामी दयानंद के देन पर लिखते हैं– महर्षि दयानंद द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश में जिस हिंदी के दर्शन हमें मिलते हैं, वही हिंदी हमें स्वीकार है। यह सरल, अनावश्यक विदेशी शब्दों से अलिप्त होकर भी अत्यंत अर्थ वाहक तथा प्रवाही है। महर्षि दयानंद ही सर्वप्रथम नेता थे, जिन्होंने श्हिंदुस्तान के अखिल हिन्दुओं की राष्ट्र भाषा हिंदी है।य ऐसा उद्घोष व प्रयास किया था। (सन्दर्भ–वीर वाणी पृष्ठ 64) शहीद भगत सिंह ने पंजाब की भाषा तथा लिपि विषयक समस्या के विषय में अपने विचार भाषण के रूप में प्रस्तुत करते हुए हिंदी भाषा के समर्थन में कहा था कि– श्बहुत से आदर्शवादी सज्जन समस्त जगत को एक राष्ट्र, विश्व राष्ट्र बना हुआ देखना चाहते हैं। यह आदर्श बहुत सुंदर हैं। हमको भी इसी आदर्श को सामने रखना चाहिए। उस पर पूर्णतया आज व्यवहार नहीं किया जा सकता, परन्तु हमारा हर एक कदम, हमारा हर एक कार्य इस संसार की समस्त जातियों, देशों तथा राष्ट्रों को एक सुदृढ़ सूत्र में बांधकर सुख वृद्धि करने के विचार से उठना चाहिए। उससे पहले हमको अपने देश में यही आदर्श कायम करना होगा। समस्त देश में एक भाषा, एक लिपि, एक साहित्य, एक आदर्श और एक राष्ट्र बनाना पड़ेगा, परन्तु समस्त एकताओं से पहले एक भाषा का होना जरुरी है, ताकि हम एक दूसरे को भली भान्ति समझ सके। एक पंजाबी और एक मद्रासी इकत्रे बैठकर केवल एक–दूसरे का मुँह ही न ताका करें, बल्कि एक–दूसरे के विचार तथा भाव जानने का प्रयत्न करें। परन्तु यह पराई भाषा अंग्रेजी में नहीं, बल्कि हिंदुस्तान की अपनी भाषा हिंदी में होना चाहिए। महात्मा गाँधी हिंदी भाषा के कितने बड़े समर्थक थे इसका पता उनके इस कथन से मिलता है जब उन्होंने कहा था की जगदीश चन्द्र बसु आदि विद्वानों के आविष्कार जनता की भाषा में प्रकट किये जाते तो जिस प्रकार तुलसी रामायण जनता की भाषा में लिखी होने के कारण अपनी चीज बनी हुई हैं, उसी प्रकार से विज्ञान की चर्चायें, विज्ञान के आविष्कार जनता के जीवन को प्रभावित करते। स्वामी दयानंद और आर्यसमाज की हिंदी भाषा को देन निश्चित रूप से अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय है।

शोक समाचार-हर्ष मुन्जाल का निधन

1. श्रीमती हर्ष मुन्जाल का गत दिनों निधन।
2. श्रीमती अंगूरी देवी श्योराण(फरीदाबाद) का निधन।
3. श्री वीरेन्द्र एलावादी आयु 55 वर्ष का निधन।
4. महन्त अवैद्यनाथ जी का निधन।
5. महाशय वेगराज आर्य भजनोपदेशक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा सम्पन्न

मांसाहार, गो हत्या बन्दी व नशाबन्दी के लिये आर्य समाज कार्य करे–**स्वामी आर्यवेश**

दिनांक 13 व 14 सितम्बर 2014 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा की बैठक आर्य समाज शालीमार बाग पश्चिमी, दिल्ली में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा), श्री आनन्द कुमार आर्य (कोलकता), स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी (गौतम नगर), स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (हरिद्वार), स्वामी विश्वानन्द जी (मथुरा), स्वामी चन्द्रवेश, स्वामी रामवेश, प्रो.सारस्वतमोहन मनीषी, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री सत्यव्रत सामवेदी, श्री मामचन्द रिवाड़िया, श्री रमाकान्त सारस्वत (आगरा, श्री लक्ष्मण आर्य (मध्य प्रदेश), श्री कमलनारायाण आर्य (छतीसगढ़), श्री गोबिन्दसिंह भण्डारी (बागेश्वर), श्री मित्रमहेश आर्य (अहमदाबाद), श्री यशपाल यश (जयपुर), आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, डा.अनिल आर्य, वैद्य इन्द्रदेव, श्री नरेन्द्र आर्य सुमन, श्री बलजीत आदित्य, डा.ओमप्रकाश मान, श्री अमित मान, आचार्य सत्यवीर शर्मा, आचार्य सुखदेव तपस्वी, आचार्य छविकृष्ण शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य शिववीर शास्त्री, श्री महेन्द्र भाई आदि ने अपने विचार रखे। संचालन सभा मन्त्री प्रो.विठ्ठलराव आर्य ने किया।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन नया बाजार के सामने से शराब का ठेका बन्द

डा.अनिल आर्य ने राष्ट्रपति,प्रधानमन्त्री, केन्द्रीय गृहमंत्री, केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री, उपराज्यपाल को दिया था ज्ञापनः आर्य जनता में सर्वत्र प्रसन्नता की लहर

उल्लेखनीय है कि गत् 20 अगस्त 2014 को देश के शहीद मन्दिर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन,नया बाजार,दिल्ली के सामने शराब का ठेका खोल दिया गया था, ठेका खोलने के विरूद्वश्री ओमप्रकाश जैन, श्री नरेश कुमार गुप्ता,श्री संजय सिघंल (दिल्ली ग्रेन मर्चेन्ट एसोशियन) के नेतृत्व में विशाल धरना कई दिन चला। 23 अगस्त को डा.अनिल आर्य ने अपने साथियों सहित धरने पर पंहुच कर व्यापारियों को सम्बोधित करते हुए विश्वास दिलाया कि समस्त आर्य समाज आपके साथ खड़ा है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री डा.हर्षवर्धन एवं दिल्ली ग्रेन मर्चेन्ट एसोशियन का डा.अनिल आर्य के नाम पत्रः–

NATIONAL HEALTH MISSION

डॉ॰ हर्ष वर्धन
Dr. Harsh Vardhan

सत्यमेव जयते

FTS 73/67 /2014/VIP/HFM
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री
भारत सरकार
Minister of Health & Family Welfare
Government of India

29 अगस्त, 2014.

प्रिय श्री आर्य जी,

आपके द्वारा भेजा गया पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

जिसमें आप स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान भवन नया बाजार में दिल्ली के आबकारी विभाग द्वारा नये शराब का ठेका खोलने का विरोध किया है। आप लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखकर मैंने माननीय उपराज्यपाल महोदय से इसे अविलम्ब बन्द करने के लिए कहा था और आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि वह शराब का ठेका बन्द कर दिया गया है।

सादर,

आपका,

(डॉ. हर्ष वर्धन)

डॉ. अनिल आर्य,
राष्ट्रीय अध्यक्ष के.आ.यु.प.,
आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी,
दिल्ली-07.

348, ए-स्कंध, निर्माण भवन, नई दिल्ली-110011
348, A-Wing, Nirman Bhawan, New Delhi-110011
Tele : (O) : +91-11-23061647, 23061661, 23061751, Telefax : 23062358, 23061648
E-mail : drhrshvardhan@gmail.com, dr.harshvardhan@nic.in : Website : drharshvardhan.com

---

23955101, 23908461
30478461, 66708461

दिल्ली ग्रेन मर्चेन्टस एसोसियेशन (रजि०)
DELHI GRAIN MERCHANTS ASSOCIATION (Regd.)

President	General Secretary	Treasurer
Sh. Naresh Kumar Gupta Mobile : 9810577997	Sh. Sanjay Singhal Mobile : 9811066627, 9311066627	Sh. Ram Chander Gupta Mobile : 9313740746

Vice President (1st)
Sh. Dharm Pal Goel
Mobile : 9811033970

Vice President (2nd)
Sh. Rajinder Prasad
Mobile : 9810910042

Vice President (3rd)
Sh. Ajay Kumar
Mobile : 9711266462

Vice President (4th)
Sh. Pritam Kumar Jain
Mobile : 9810049416

Secretary
Sh. Parmod Bansal (Titu)
Mobile : 9811255326

Joint Secretary
Sh. Subhash Jain
Mobile : 9312262862

Ref. No. DGMA/2014/296 Dated 29/08/2014

डॉ0 अनिल आर्य जी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद (पंजी0)
आर्य समाज, टी–176–77, कबीर बस्ती
पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली–07

विषयः नया बाजार मेन रोड पर खुली शराब की दुकान बंद करवाने में प्राप्त सहयोग के लिए आभार एवं धन्यवाद।

मान्यवर,

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि नया बाजार मेन रोड पर अनाज मार्किट के मध्य दिनाँक 20 अगस्त 2014 से खोली गई शराब की दुकान बंद हो गई है।

उपरोक्त शराब की दुकान को बंद करवाने में आपने जो सहयोग दिया और हमारे मंच पर आकर शराब की दुकान खुलने का विरोध कर रहे हमारे सदस्यों को संबोधित करके उनका उत्साहवर्धन किया, जिससे उनमें नई उर्जा का संचार हुआ और हमारे संघर्ष को मजबूती मिली। इसके लिए हम हृदय से आपके आभारी हैं और तहे-दिल से आपका धन्यवाद करते हैं तथा भगवान से आपकी दीर्घायु एवं उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

धन्यवाद।

भवदीय

(संजय सिंघल)
महामंत्री

156/41, NAYA BAZAR, DELHI-110006, E-mail : dgmanb@gmail.com

फरीदाबाद के हनुमान नगर में नई आर्य समाज की स्थापना

रविवार, 14 सितम्बर 2014, आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद को श्री सोहनलाल आर्य व उनके सुपुत्र श्री ओमप्रकाश आर्य ने आर्य समाज की स्थापना के लिये हनुमान नगर नहरपार 200 गज भूमि दान दी, जिसके उद्घाटन के अवसर पर परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य मुख्य अतिथि के रूप में विद्यमान थे। चित्र में दान दाता श्री सोहनलाल आर्य का सम्मान करते श्री लक्ष्मीचन्द आर्य, स्वामी श्रद्धानन्द जी, डा. अनिल आर्य, श्री महेश गुप्ता व द्वितीय चित्र में समाज की नई कार्यकारणी के अभिनन्दन का द्रश्य। डा.गजराजसिंह आर्य ने संचालन किया। श्री वीरेन्द्र योगाचार्य, श्री वेदप्रकाश शास्त्री, श्री मकेन्द्र कुमार, श्री मदनलाल तनेजा, श्रीमती विमला गोवर, श्री देवेन्द्र तनेजा आदि प्रमुख रूप से उपथित थे। श्री राजेश शास्त्री के ओजस्वी भजन हुए।

सूर्य निकेतन में स्वतन्त्रता दिवस व करनाल में हिन्दी दिवस सम्पन्न

15 अगस्त 2014 को आर्य समाज,सूर्य निकेतन, दिल्ली में स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर सम्बोधित करते पूर्व विधायक श्री नसीब सिंह, साथ में डा.अनिल आर्य, श्री यशोवीर आर्य(प्रधान), श्री सुनील गर्ग, कै.अशोक गुलाटी, श्री हीराप्रसाद शास्त्री, श्री महेन्द्र भाई, श्री राजीव कोहली, श्री यज्ञवीर चौहान। द्वितीय चित्र–करनाल में आयोजित हिन्दी दिवस में श्री शान्तिप्रकाश आर्य का सम्मान करते श्री स्वतन्त्र कुकरेजा,श्री अजय आर्य, श्री रोशन आर्य आदि।

श्री मांगेराम गर्ग का अभिनन्दन व परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट का विमोचन

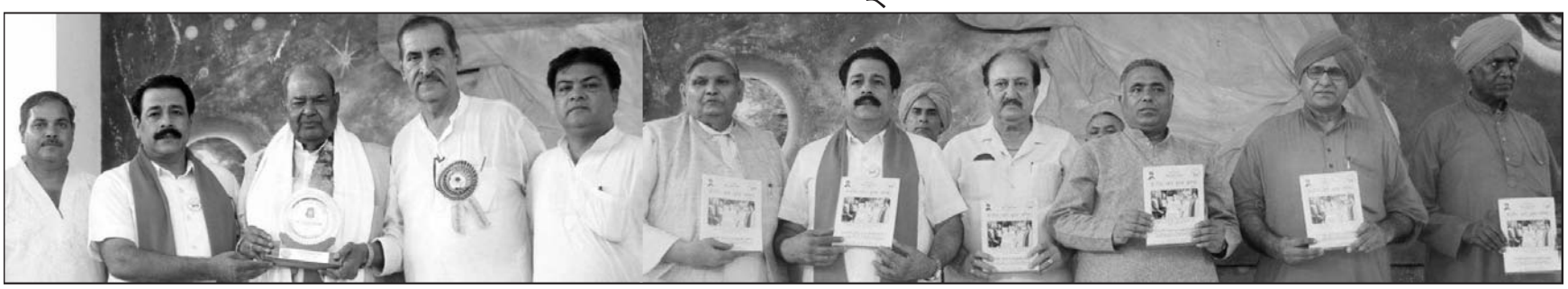

पूर्व प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री मांगेराम गर्ग का स्वागत करते डा.अनिल आर्य,श्री यशोवीर आर्य, श्री रामसेवक आर्य, श्री धर्मपाल आर्य। द्वितीय चित्र में परिषद् की वर्ष 2013–2014 वार्षिक रिपोर्ट व आय–व्यय विवरण का विमोचन करते आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, डा.अनिल आर्य, श्री भारतभूषण धूपड़, आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, स्वामी आर्यवेश व स्वामी सौम्यानन्द जी।

पार्षद श्री यशपाल आर्य व श्री रामेश्वर गोयल का अभिनन्दन

दिल्ली महावीर नगर के भाजपा पार्षद श्री यशपाल आर्य का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, श्री सुरेश आर्य (गाजियाबाद), श्री प्रवीन आर्य, श्री रामकुमार सिंह। द्वितीय चित्र–योग निकेतन के मन्त्री श्री रामेश्वर गोयल का स्वागत करते डा. अनिल आर्य, स्वामी आर्यवेश व श्री रामकुमार सिंह।

आगरा के श्री रमाकान्त सारस्वत व छतीसगढ़ के श्री कमलनारायाण शास्त्री का अभिनन्दन

आगरा के आर्य नेता श्री रमाकान्त सारस्वत का स्वागत करते डा.अनिल आर्य,प्रो.विठ्ठलराव,श्री यशपाल महाजन,श्री विद्यासागर जी, द्वितीय चित्र में छतीसगढ़ से पधारे श्री कमलनारायण शास्त्री का स्वागत करते डा.अनिल आर्य,श्री शिवराज शास्त्री,श्री सत्यव्रत सामवेदी व प्रो.विठ्ठल राव आर्य ।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970